

७. धूप की उष्मित छुवन से

— रामदरश मिश्र

: एक :

रास्ते में रोशनी तेरी मुसकान हो गई,
पहचान थी न तुझसे यों पहचान हो गई ।

कितना मैं चला, चलता रहा, राह कठिन थी,
देखा जो तुझे राह वो आसान हो गई ।

अब तक तो उदासीन-सी थी मुझसे ये दुनिया,
जाने क्या हुआ आज कदरदान हो गई ।

आई थी खुशी घर मेरे रहने के वास्ते,
दो दिन के लिए हाय वो मेहमान हो गई ।

पल भर को नहीं चैन से सो पाया आदमी,
सपनों से आज नींद परेशान हो गई ।

रोती रही अकेली पड़ी रागिनी उसकी,
लोगों के स्वर मिले तो वो सहगान हो गई ।

: दो :

पेड़ हैं कुछ खुश समझकर आ रहा ऋतुराज है,
भर रही पंखों में चिड़ियों के नई परवाज है ।

हो रही महसूस है खुशबू हवाओं में मधुर,
दिख रहा कुछ आज फूलों में नया अंदाज है ।

धूप की उष्मित छुवन से फूल-सी खिलती त्वचा,
बज रहा जैसे दिशाओं बीच कोई साज है ।

खुल गई सिमटी हुई फसलों के फूलों की हँसी,
उग रही कंठों में गाँवों की नई आवाज है ।

भूल जाओ कल तलक के वक्त की नाराजगी,
दोस्त बन खुशियाँ लुटाता देख लो दिन आज है ।

— ० —

परिचय

जन्म : १९२४, गोरखपुर (उ.प्र.)

परिचय : प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र जितने समर्थ कवि हैं उतने ही श्रेष्ठ उपन्यासकार और कहानीकार भी हैं। नई कविता, छोटी कविता, लंबी कविता के साथ-साथ गजल में भी आपने अपनी सार्थक उपस्थिति रेखांकित की है। आपके सारे सर्जनात्मक लेखन में गाँव और शहर की जिंदगी के कठोर यथार्थ की गहरी पहचान दिखाई देती है।

प्रमुख कृतियाँ : 'पथ के गीत', 'पक गई है धूप', 'कंधे पर सूरज', 'अपने लोग', 'सहचर है समय', 'एक अंतयात्रा', 'हिंदी कविता: आधुनिक आयाम' आदि।

पद्य संबंधी

यहाँ रामदरश मिश्र की दो गजलें दी गई हैं। प्रथम गजल के शेरों में आपने पहचान के साथी के मिलने से राह के आसान होने, अस्थायी खुशी, जीवन की बेचैनी की बात की है।

दूसरी गजल में वसंत के आगमन से प्रकृति, प्राणियों में होने वाले परिवर्तन एवं प्रसन्न वातावरण की बात है।



शब्द वाटिका

कदरदान = गुणग्राहक

रागिनी = गीत-संगीत

सहगान = कई आदमियों का एक साथ
मिलकर गाना, समूहगान

परवाज = उड़ान

उष्मित = गर्म

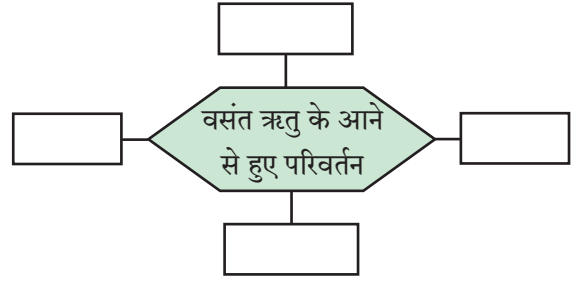
साज = वाद्य

* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) रिक्त चौखट में सुयोग्य उत्तर लिखो :

१. अब तक कवि से उदासीन रहने वाली -
२. सपनों से परेशान होने वाली -
३. आज कदरदान होने वाली -
४. फूलों में दिखाई देने वाला -

(२) संजाल पूर्ण करो :



(३) कविता की अंतिम दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखो :

कल्पना पल्लवन

‘जो बीत गई सो बात गई’ इस संदर्भ में अपने विचार लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

प्रकृति में निरंतर अनुशासन दिखाई देता है ।



भाषा बिंदु

१. पाठों में आए हुए वाक्य के प्रकार (अर्थ के अनुसार)-पाँच उदाहरण लिखो :

२. निम्न शब्द शुद्ध करके लिखो :

परकृती, शक्ती, मै, नहि

उपयोजित लेखन

छूट्टियों में आयोजित संस्कार वर्ग के आयोजक के नाते आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।



स्वयं अध्ययन

छह ऋतुओं का वर्णन करते हुए उनकी चित्रसहित जानकारी लिखो ।